

निवद ७ ॥ यूनस्तुडयविणकावादिबहुयविनिश्चयविनियुक्त
 लुमस्तुलतावयन ॥ तत्सध्याह्वाकालतत्याविनर्तवदान्तगतकान्त
 वीजविनाजिगीविचिन्त्यमनमनुय ० नरुकार्यकुश्याग ॥ उवदगुद्धा
 मवधममावदगुद्धा ॥ वदो ॥ ततस्तेनद्वजयस्मिनिश्चयन सव
 तश्मगगविपनिश्चायाससलोकधायुषसवाथहावायूनः सैह
 तयुवयवयमनुकार्यकुश्या ॥ उवदमानाह्वाविति ॥ सवत
 कलमम्युष्टः सवाधैकयवक्त ॥ ४ ॥ निमस्यषडुर्जैव घना

कालामालानकशक्तिः ॥ आलीहमुदितावद्ध ॥ विपुत्रकविनासनी ॥ १४ ॥
 नमः कलतालाघात ॥ चलतालाघात ॥ रुकुटीकतेद्रुं काल ॥ सकयाता
 लरुं कनी ॥ १५ ॥ नमः लिशगुशसाक ॥ साकनिवान (मवप्र) खाहा
 ययवुंसीयुद्ध ॥ मदायातकनासनी ॥ १६ ॥ नमः यमुदितावद्ध ॥
 विपुंनपयशंदनी ॥ दण्डकत्रययन्याम ॥ विद्याद्रुं कालदीयिते ॥ १७ ॥
 नमामुत्रमहाधात ॥ द्रुं कालकानाकालवीजित ॥ मत्रुमलुलकेलाज ॥ उवन
 एयवात्रिली ॥ १८ ॥ नमः सुत्रसनाकाल ॥ रुविनाद्रुकलस्त्रिण ॥

जनादिनुकरु काल ॥ गुणविषनासनी ॥ १९ ॥ नमः सुत्रगण
 (धक) ॥ सुत्रकिन्नलसर्वोत ॥ आवद्धमुदिताशाग ॥ कलिद्रुं सप्रनासनी
 ॥ २० ॥ नमः द्युदार्कसीयुद्ध ॥ नयनयुतितासुत्र ॥ रुदिद्विनुकरुद्रु
 ॥ विषमकलनासनी ॥ २१ ॥ नमः स्त्रिन्नविनास ॥ निवस
 किसेमन्वित ॥ गुरुवागलज ॥ काय ॥ नमः प्रियवत्रुत्र ॥ २२ ॥
 मूलमर्कमिद्विषार्क ॥ नमः कारिकविनास ॥ गकः यय (०) यत्रताधीमान्
 दयाराकिसेमन्वित ॥ २३ ॥ स्यायन्वापातनुकाय ॥ स्यत्रसर्वविषय

१४
 दै । सर्वथाययसमन सर्वज्ञानिनामनी ॥ २३ ॥ अतिद्विकशवदुर्लभं ॥
 सकलजिनकाटिनि ॥ अस्मिन्नरुत्वमासाद्य सोमबोधयेयवज्ज ॥ २४ ॥
 विषकस्यमहाद्याय स्वेवर्तवार्थजगम ॥ सलपयलर्ययानि खादित
 पीतनव ॥ २५ ॥ गुरुद्वलविषकानी यत्रमनुविनामनी ॥ अनेवविम
 त्वानी ॥ दितिमफातिवार्त्तमा ॥ २६ ॥ पुणकामालरत्नूरु धनका
 मालरत्नूरु ॥ सर्वकामाप्रवाप्राति ॥ नविद्येयतिरुन्यत ॥ २७ ॥ ॥ ॥
 कविशक्तिफारुसमाफ ॥ ॥ वदद्यञ्जसमृदा ॥ निरुतायतकुर्व

पद्मयार्त्तवार्त्त ॥ विनालकालमर्क ॥ लिपयलपयल काधण्ड्य
 लाण ॥ नाथामिहामनम ॥ खमिवसेवविन ॥ कुरुवासा ॥ गमरा ॥ श्री
 मञ्जुनाथिवाड ॥ विरुवननमिती ॥ पाठ्यागमम्वराव ॥ ध्यागमम्वल
 याग्रासुवादि ॥ ॥ नीलन्यवत ॥ उल्यदरुणिमुखी ॥ गृगमय
 मूलाननः ॥ के ॥ मर्ववदुनागरु ॥ मलनगाडु ॥ मयीनफनी ॥ खद्वान
 पत्र ॥ मवितामनिकलाच ॥ मकुयागावलि ॥ श्रीम ॥ कुरा ॥ गमरा ॥ उमी
 निलगा ॥ लानम्वरीयाडुव ॥ लानम्वरीयाग्रासुवादि ॥ ॥

अधिगलपुलकाय ॥ क्रियनिर्णयथाय ॥ दृष्टवजलल्लय ॥ धीय
साम्यवथाय ॥ सद्यत्रियुसमृताय ॥ सत्वकि निर्णय ॥ समीनसकलताय ॥ या
हुवामेशयाय ॥ धर्मेशणीयाग्रासिवाय ॥
सारणीशवसदणी शवविद्या नीलपमालायका ॥ मायूरीमयूरा
सनिविषरुवा सुवर्णवर्णवयु ॥ श्रीमच्छ्रीतवागीजगद्धिता मन्त्रानुमान
लिसरु ॥ धीयमन्त्रविवाङ्गिताय तिस्रवावकुचव्रीयाहुव ॥ ध्वयैवत्र
कायाग्रासिवाय ॥ ॥ श्रीमत्साक्षाद्विवाङ्ग यवत्र

ननिलया पृष्ठयियुषसिधु ॥ सर्वहृत्कनमार्ग धिक्त्रधितधिया ॥
ध्यानमाविस्तकाय ॥ गमकाप्रकोदिमुका निमित्तविलहिता आर्यस
त्वादिनूया ॥ यद्वायावमिताया सकलजनहिता याहुवावृद्धमाता
॥ ध्वयद्वायावमिताग्रासिवाय ॥ ॥ सत्वाविष्टनि
रुकि यतिदिनजगता क्लेशविह्वल्यका ॥ शाराशरीयवर्णवर्णवि
नगरुलया गत्वतष्टुनानूया ॥ सर्वयासवन्तया सकलजनहिता
इत्यमरानवधाना ॥ समन्वयानित्यकाली विह्वलननमिती याहुवायव

१६२
 वक्रा ॥ ध्वयैव वक्राया आसिवादि ॥ ० ॥ इतीध्ववती ॥
 शृमानलीकरीयस्यापुगावोदिना ॥ (ने) राग्यवयवायुवगमवगातन्त्री
 सदागिष्ठिनि। यद्यद्यदीकृति सर्ववमुदकनि विन्नामलि सायथ ॥ याया
 द्वावसूक्ष्मलीरागवगीया निदुःखाय ॥ ध्वयैव वक्राया आसिवादि ॥
 ॥ यः श्रीमान्समस्तसुखविनीयादावविन्द्याद्विग
 साक्षात्पुन्यविधानमैगलपुन्रिन्नामलिमेवविगानि (ने) धाधृतादावजा
 लजदिल (ने) दानियावग ॥ यायादागवान्मूलीध्ववक्रिनायेदिप्यमानाद्य

ति ॥ ध्वमाकर्मिकया आसिवादि ॥ ० ॥ वक्राद्यविल्वित्या
 सुवमनुजधने प्रशमानादिताथ ॥ वयथादिगलानाशयमथनकली सर्वनाम
 दिहकि । काकावक्रावक्रगपुसिगिरयकवाध्वसनीध्वसनीया दाविदवाधि
 मयपुतिदिवससमायाह्वयैव वक्रा ॥ ० ॥ वृद्धमिहामनस्क
 उवनाहिकाकली सर्वलकिकवध ॥ रावासावेकराव पुतिदिननमिरी पू
 यमिशानाव । कुलीकाश्चवृदीह स्तुतिकसमनिरी ध्वयवाधिधव
 पायादावजध्वगु यवमवयवगुने वृद्धानन्दनाथ ॥ ध्वयैव गुरागुयाओ

सिद्धि ॥ ० ॥ उद्यातागलवकानिलधुगाविधुगाराग
 ना ॥ दधनीस्तिनीयासेलाक्रमहीगाधियुषधाकायुगा ॥ वृद्धकौनस्तमा
 विलाविकलखस्रानव्यसन्धोरुया ॥ रावागोवविवानेभाविनेरुतघावा
 रिकायाउवडा ॥ ध्रुवदुवालाहयाआसिद्धि ॥ ॥
 आलीहातिष्ठमानाकुचगनूयगधरुलवैसतयद्र ॥ आनृदंकातिनायाशिद्ध
 वनेमनरुनामास्वगाद्वविद्या ॥ आनन्दापुत्रमानानिद्रूपमसरागैस्वविद्या
 गमैग ॥ आवाधायक्रमानजिनपुनमिनेकाउवाष्टीसैतभावडाशीम

संननर

मलयाआसिद्धि ॥ ० ॥ स्वयवजनयदिशदंनिगावाधिः
 मान ॥ शिद्धवनमननाथानित्यसंमानगात्र ॥ प्रकृतिगतनलकाप्नोधि
 यत्रुयास्वत्रुया ॥ मयवकलखरुगायाहुदीर्घकधावडा ॥ शीदीर्घकल
 याआसिद्धि ॥ ॥ थनायायमदाययापणीतायानीतिद्वया
 वसा ॥ दानवायमथामुखनऊरात्रपासाथमध्वकत्र ॥ यद्ययद्रधियोमुखो
 मुखमृदरुगावलीलोलेयोनाकल ॥ नान्यनायविवययीनिवजगत्या
 याउलाकेध्रडा ॥ श्रीलाकनाथयाआसिद्धि ॥ ॥

निम्नानाथदिनकमलुलगाकायादिवल्लुवृणा थावकांलाकलाकाल
 नमृगसवासुभ्राकुसुपायमा । विद्यावृद्धवर्कदरुतिथावकुपुथाभंदिनि
 स्नानन्यसन्दीरुमाशावातावविद्यालनेविबहितावालाहिकावंधसि॥
 ॥ वंदावालाहियाभ्रासिवादि॥ ॥ यविहतायविकन्य
 धर्मकायनिमाहु । निनयमसुखयाण वानुसैशागकाय । कुवनकुरुत
 विधाना २ यम्यनिमालिकोय ॥ सरवउरागवानुणीयणीवजसुव॥ ॥
 वंदासवयाभ्रासिवादि॥ ॥ आयवृद्धियल्लवृद्धि ॥

वृद्धियकामुखसुथ । धनसन्तानवृद्धिबहु सन्तानसकवृद्धिबहु ॥ ० ॥
 २ नागमना॥ ॥ तालमाथ ॥ ॥ लागारुवलाकियात्रिभसचवधवयिकवायि
 वरंसा २ उमवायकंमदियासुमानमृककंदिगंवा ॥ ॥ यममावुवसम
 २ अकानयतलवस अयनिसुजिनैकव शाकावेप्रवाजसु यथावाकम्यतिमि
 ॥ ॥
 २ उजम॥ ॥ वंदावाकादीय ॥ धनहीसिन्धुमृदयुजा ॥ जाय ॥ ॥ उगाहं वंज
 वेलाचनीकं २ ॥ स्वारु॥ ॥ धनधूम ॥ ॥ रगवृंभीमगधी ॥ ॥ वंजआमिहं वी
 रादानकसुनाथनाय ॥ मगुर्नकलुधमकासिकोनामनकं पायः ॥ ॥
 युजनायनगम्यरपुवनस्यरपुवनयसादकेसककेसिकासिमे

वा॥ धे साचना साचना सखरु लना नृधम सरु लंडं म सरु डी विवेंद्र
 समय स मरु देवाना वृक्षाना रविना नृनाधना यव ड मय निश
 मयामद ॥ ० ॥ धन लिखान वाय ॥ उ वं व ड वा ला दी य न म सादा ॥
 उं हां था यामिनी य न म सादा ॥ डीं डी स क्ता मि न य न म सादा ॥ डीं भां दि नी य न
 म सादा ॥ रुट रुट रुट रुट का य व ड यु यं य रि च्छ सादा ॥ य य स य द ल य ड ॥ ० ॥
 शुभ ना के ले म मा वि भा रु के सा रा व ड का वि ग क ल्या वि र ड न म रु
 म डी व ड या वि ॥ ० ॥ उ या गा न ल य क मा नि ल य मा या वि ॥ ४ दि य ल री क

(Faint bleed-through text from the reverse side of the page)

वा नाहिवडाहदा (अ)सि यलशु धरा १ धर्म धाग ध्वनि च (क) मूत्रा
 स्नान के (उ) धन निहिता कला २ वज्र सास वनिच (दु) द्य सुवाथ सिधि
 ॥ ४ ॥ वेद्या माला सुगीगा य धिगा दिन वत्रः सावत्री धूय
 वजा (वे) गा प्रिगा धे वजा यह सिता वदनाः सीगाणि आदगा
 गाः ल शिब्रुदस्य वा (की) सकल एय हराः सात्र धिदि यव
 ज (उ) द्य सास वधुसी धि ॥ ५ ॥ वेद्या माला धर्म च कः य धिगा
 दिन वत्रः यव गा गू दे कुठः भव त्यात्र यिनिचः श्रिता

आशा अरुण

ASHA ARCHIVES

2706

I

यदिगुरुनका अकावलासुयोमपुली ततमधुदुंकावलावडां वासकसुंकावलावला
मपुली ॥ उयविषयायविवडां ॥ सैरुयुदुंका ॥ सां सुं सुं सुं सुं ॥ उंवडायनरुडां ॥
वृत्तिकनसाधनं ॥ कूं मुद्रि कूं वकवय युं कलुनागयां सुं जिह्वाया अमवां ॥
सुं कलु सुं उजदय सुं कदय सुं नागा समवां ॥ उंवडाकायडां उंवडा
वाकं ॥ उंवडाविकुं ॥ मूदोमकितां न सखाधिसन ॥ उं अः यतीकायदुं खाडा ॥
उं पुवलेसखायायपुतीकखाडा ॥ उं सुं सर्वसं ॥ धनिदुं रुं ॥ सिं लिनी सर्वसं मोध
नी दुं खाडा ॥ उं दुं खाडा वडा ॥ उं डा ॥ खाडा यणु ॥ उं दुं खाडा गनु ॥ उं सुं खाडा यणु

उं अः खाडा ॥ धूप ॥ उं दुं ॥ खाडा दीप ॥ उं सुं खाडा नेवाय ॥ उं सुं खाडा वलि ॥ उं अः दुं
खाडा ॥ मपुलाधिसन ॥ मलाधिसन ॥ रं न्यान कु माकावला मामकी अष्टादशरुं
स्यामवसुं विराय ॥ उं रुं डां ॥ अं सुं खाडा ॥ यद्वध्वं नृपसुवकुं कानि कध्यायक (धेव
सुवावर्णव) आध्यायवडां सुववडायां लिखाविधेयाविधेयनध्याया ॥ रुकावकनतवकुं
रुं कालीगधनासनी रुं कालीवीर्यरुकाय अमृताकालरुतावय ॥ नीलनीलवनीलारा
अकायसंगसंगीनी ॥ रक्षा रुतामसावाच अकयायवमामकी ॥ ततकसयनिकासिकृत
कथा ॥ यविवयदुदिनस ॥ उं वडाकवयदुं रुं ॥ उं दुं खाडा मुद्रिललाठयदि ॥ अणु
अं सुं खाडा

४ वाम ॥ नेत्रावनादिवाक्श्रीरुस्यणविवदध्वानारायणिनयं ॥ ॐ
 हुं ॥ ॐ हुं वेदकुसुमा ॥ ॥ ताः ॥ न्यविचिक्तयत ॥ खद्वययम्
 कावणवन्दमणुलं तत्सध्वंकावणं नानावस्मिनिस्थितं तत्
 य वस्मिन्लनैवकृत्वा यणदि (सकध्वं) स्मितमवसत्वांन
 मदीकृत्य। यनयकनिष्ठुवनं समानुलं यथं वतादृष्टानं आकृष्टं
 त ॥ ॐ आकृष्टं ॥ ॐ वेदकिण्ड ॥ ॐ वेदयाण्ड ॥ ॐ वेदम्य ॥
 वं ॥ ॐ वेदावंग ॥ ॐ आः पुवत्तमत्कालायणीयागमध्वनायम्वा

[illegible]

ॐ तत् सत् ॥ अथ लनाय स्वाहा ॥ ॐ दे अर्पु दृष्टा कला तस्वाहा ॥ ॐ वं अर्ध न धवाय स्वाहा
॥ ॥ कृष्णोदमसावोद ॥ यवेदकर्मसमाप्तिग ॥ कृष्णकन्यावरीग ॥ नन्दा
गीताविनायक ॥ वामसिद्ध्याविरिति ॥ उमायवो गतास्तव ॥ ययाश्च
विजया ॥ श्रेव ॥ अजिता अयना जिता ॥ शयक लिमदाकावी ॥ सुलः
कालिमदाकालिमियागिनी ॥ नृन्दि वल्लिद्याविदुष्टि ॥ त्विवको गिदः
॥ ॥ श्वविभा ॥ कामाजिनीयिवाचित्य ॥ अमावसिजयागिनि ॥ धानव
यामदात्रया ॥ दष्टवृथाकयाविनी ॥ कयावमालमातिन्या ॥ षड्गीतय

मदद्विका ॥ खड्गदृष्टाप्रभुदृष्टा ॥ वददृष्टाधनसुध ॥ यैवजोकि
नीमदागत ॥ यैवायैवायदातपूजा ॥ ॐ नमः सर्वतथगतमनालेत
विलासनमितेनमामिशगवर्क ॥ ऊहवेद ॥ छिछिछिछि यतीकुक्कसमा
जलिनाथकावदप्रययितीकुस्वाहा ॥ वदप्रययस्वाहा ॥ वदप्रययस्वाहा ॥
वददीयस्वाहा ॥ वदगन्धस्वाहा ॥ वदनव्ययस्वाहा ॥ ॐ वदसत्वर्मगु
गत्मक ॥ वदवर्त्मनकर्तृ ॥ वदधर्मगनायन ॥ वदकर्मकृत्कर्तृम
॥ ॐ वदलाभ्ययस्वाहा ॥ ॐ प्रगन्धयस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वीनायः

स्वादा ॥ ॐ ह्रीं ध्याय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं गीताय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं ध्याय स्वादा ॥
ॐ मंत्राय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं दीपाय स्वादा ॥ ॐ ह्रीं स्वादा वद ॥ ॐ ह्रीं स्वा
दा वद ॥ ॥ माहियवदमलाल कनियमत्व विमाह धर्मविमा
ह केहवदसमावधवद ॥ ह्रीं वद घणुनलितपालितमववद यव
लित ॥ यज्ञायामिगानाथ मागविनमवमत्वहययावतायलिह
ह्रीं ह्रीं जय स्वादा ॥ नमामु यागप्रियमत्वमावक नमामु सवति
कनक ॥ नमामु मागवक ॥ नमामु ममावाहवमाह कनक नमामु गवक

नमाम्यहमदा ॥ ॥ नमामु ह्रीं नमामि ह्रीं नमानम ह्रीं स्वादा ॥ मनुत
थल ॥ ह्रीं कालियवर्मधव ह्रीं कालिष्टिनाजन ॥ ह्रीं कालिहुरव
धुन्य ह्रीं कालिहुरनुमाहृत ॥ नागभयनेयलम्याथो वदुनाक
वपुर्वम ॥ जयनयकटुध्वं वदुवाकनमामिह ॥ नमामु ह्रीं नमा
मिह नमानम ह्रीं स्वादा ॥ ॐ यवजकिनीयुजायस्मानयात्मानं नियोगि
यामि ॥ ॐ आवायुयुजायस्मानयात्मानं नियोगियामि ॥ ॐ सकलम
त्वविशानाथ यात्मानं नियोगियामि ॥ समयस्त्वममयदा ॥ ॐ गतवत्

नृपयणवत्पदिकीकृत्या ॥ वृद्धधर्मसमर्पय नवर्णगच्छामि नित्यमम
मिया नम्यहि सर्वेषां यागगुप्तादिशक्तिनी ॥ वीतवीर्यध्वनी
वोविमत्तामदात्मक ॥ विष्णुपदगुप्तावाय ॥ सवर्णगच्छामि नित्य
मम ॥ समन्वाहवत्सुमासव ॥ वेवावनाकायवत्तायलाय ॥ माघ
मिद्धिपमखाऽसर्ववृद्धवाविमत्ता ॥ अहंभमकनामा ॥ मविता
मयादाय ॥ यावदावाविमत्ता निषण्ण ॥ उद्योदयामियवम वावि
विरुमनर्क ॥ यथाश्रियाश्रिकानाथ ॥ संधाऽधिका निश्चयाऽश्रिवि

धालिवसिद्धाव कृष्णतीर्थमर्मगच्छ ॥ सत्वाथकियाणीत सति
गृह्णाम्यहं हृष्ट ॥ वृद्धधर्मसमर्पय ॥ निवत्तागमनर्क ॥ अथागल
गृहीक्षामि ॥ समर्पयवृद्धयागज ॥ वदद्यष्टाकमृदाक ॥ यतिः
गृह्णामि गवग ॥ आचोयवृद्धीक्षामि ॥ मदावदकृष्णवृथा
वृद्धानपदास्यामि ॥ वद्वत्ताहृदिनयिन ॥ मदावत्तकुल
याग ॥ समर्थवमभावम ॥ सधर्मयतिगृह्णामि ॥ वायुगु
श्रुतियानिक ॥ मदायद्वकुलं शुद्ध ॥ मदावाविममृदव ॥ सर्व

सर्वसंयुक्तं यतिगुणामिसर्वतः॥ पूजाकर्मयथाशक्ता
महाकर्मकृत्वाय। उत्यादयामियवर्म वाधिविक्रमनृकृतं
॥ गृहीत्वामसर्वकृत्वा सर्वसत्त्वाथकावना७। अतीत्यगावयि
कामि अमुकामावयाम्यहं॥ अनास्वस्वनास्वामयिकामि
सत्त्वास्वययिकामिनिवृत्ता॥ ततःसमाधिमृदाव्यवस्थिता नोसा
गृहीत्वामसर्वकृत्वा गतस्मिमाविर्गणीयदहनात्मकं सर्व
लोकधाम्नि निताराणां कृताविजमाणावसर्पविराज्य॥ उस्वरा

वह्नुर्द्विर्धमाः स्वरावह्नुर्द्विर्धमाः ॥ इतिमल्लमन्त्रार्थं सर्वध
र्मनेनात्मामविर्मय७॥ तताधर्मकायनिव्यन्दीकृत धर्ममैता
गकाय मूल्यायेयिदु मृदाजकिन्यादिरिष्टत सतिधवर्गी
(धायमानमात्मानंरावय७॥ अनन॥ अजजजजवदसत्त्व अवता
वृणमिद्धिमहं ॥ रुद्ररुद्ररुद्रकातनाथ समयाहमहं नेमि
त॥ वदस्वःरुद्रकागति धरुधर्म॥ अजुअजुअजुअमताय व
दजुलिमकमलीयनहं॥ ततश्चन्यवाकावमिराज्य॥ ह्योनाहमि